परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण : जानवरी 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Giving Birth to the Purposes of God)

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

विषय सूची

परिचय	1
मरियम के चमत्कार से शिक्षाऐं	2
आप में किया गया निवेश	8
प्रार्थना के द्वारा उत्पन्न करना	12
बोले गए वचन	15
परिश्रम के साथ काम	17

1

परिचय

बाइबल हमें प्रकट करती है कि जब परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपने उद्देश्यों को पूरा करना चाहता है, तब कभी-कभी वह स्वर्गदूतों का प्रयोग करता है। परन्तु प्रायः वह मनुष्यों के द्वारा ऐसा करता है। इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को आपके और मेरे जैसे लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है।

आप जैसे-जैसे परमेश्वर के साथ चलते जाते हैं वैसे-वैसे आप उन उद्देश्यों और योजनाओं को खोजते जाएगें जिन्हें वह आपके द्वारा इस पृथ्वी पर पूरा करना चाहता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण हो सकते हैं-जैसे एक कुँवारी के द्वारा परमेश्वर के पुत्र को जन्म देना और कुछ बहुत छोटे-जैसे ग्रामीण क्षेत्र में एक नर्सरी स्कूल की स्थापना करना, जिसके विषय में कोई नहीं जानता है। तौभी ये सभी काम हैं जिन्हें परमेश्वर इस पृथ्वी पर करवाना चाहता है।

इस पुस्तिका में पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के विषय में अध्ययन किया गया है। हम विश्वास करते हैं कि जैसे आप परमेश्वर के उद्देश्यों को इस पृथ्वी पर पूरा करना चाहते हैं, तो यह अध्ययन आपके लिए लाभदायक होगा!

परमेश्वर के उद्देश्य हमारे द्वारा
इस पृथ्वी पर लागू किए जाते हैं।

2

मरियम के चमत्कार से शिक्षाएं

"इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी" (यशायाह 7:14)।

जैसे हम मरियम के चमत्कार का अध्ययन करते हैं तो यहाँ परमेश्वर के काम को आरम्भ करने से सम्बन्धित कुछ बातों को देखते हैं।

परमेश्वर का काम इस पृथ्वी पर एक निश्चित समय में होता है

परमेश्वर के पुत्र के जन्म के विषय में बहुत पहले ही अदन की वाटिका में भविष्यवाणी की जा चुकी थी (उत्पत्ति 3:15)। बहुत से भविष्यद्वक्ताओं जैसे यशायाह आदि ने उसके आने के विषय में भविष्यवाणी की थी। तौभी परमेश्वर ने उद्धारकर्त्ता को इस संसार में भेजने की जल्दबाजी नहीं की। उत्पत्ति 3:15 के लगभग चार हजार वर्षों के बाद परमेश्वर ने, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ" (गलातियों 4:4)। परमेश्वर सदैव अपने काम को इस पृथ्वी पर एक निश्चित समय पर पूरा करता है। प्रत्येक काम जिसे परमेश्वर आपके द्वारा इस पृथ्वी पर पूरा करना चाहता है वह उसके निश्चित समय में ही पूरा होगा।

परमेश्वर का काम सामान्य लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है।

जब परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में भेजना चाहा तो उसने एक जवान एक कुँवारी यहूदी लड़की को चुना जिसका नाम मरियम था। यह एक अजीब सी बात लगती है कि परमेश्वर इस सबसे महत्वपूर्ण काम को– संसार के उद्धारकर्त्ता को भेजने का काम एक जवान लड़की को सौंपता है। कितना बड़ा जोखिम परमेश्वर ले रहा था! क्या होता यदि

मरियम की कोख में पल रहे बच्चे को कुछ हो जाता? क्या होता यदि मरियम को उस बच्चे के लिए गर्भपात कराने पर विवश किया जाता? क्या होता कि मरियम को पूर्वगर्भपात हो जाता? अथवा क्या होता यदि उसे पत्थरवाह करके मार डाला जाता–यह घटना इतिहास के उस समय में बहुत हद तक सम्भव थी? तब संसार के उद्धारकर्त्ता का क्या होता? और मानवजाति का क्या होता? फिर भी सारी असफलताओं की सम्भावनाओं के होते हुए भी परमेश्वर ने इस काम को एक ऐसी जवान स्त्री को सौंपा जिसे कोई अनुभव नहीं था। यदि परमेश्वर ऐसा कर सकता है, तब वह निश्चय ही कोई भी काम–बड़ी भीड़ के पास सुसमाचार पहुँचाना, बीमारों को चंगाई देना, बन्धुओं को छुटकारे और राष्ट्रों को चंगाई देना आदि कार्य आप और मेरे जैसे लोगों को सौंप सकता है। परमेश्वर अपना काम सामान्य लोगों को सौंपने से डरता नहीं है। बल्कि परमेश्वर ने सामान्य लोगों को चुना है कि वे उसका काम इस पृथ्वी पर पूरा करें।

परमेश्वर का काम बिना मिलावट–उसके आत्मा के द्वारा उत्पन्न होना आवश्यक है।

मरियम के गर्भ में परमेश्वर के पुत्र का आना एक अलौकिक काम था–पूर्णरूप से आत्मा का कार्य। यद्यपि गर्भधारण एक मानवीय कोख में हुआ, तौभी यह पूर्णरूप से चमत्कार था। इसमें किसी मानव का हस्तक्षेप नहीं था। जैसा लूका 1:35 में स्वर्गदूत ने मरियम से कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।" प्रत्येक कार्य जिसे परमेश्वर हमसे कराना चाहता है वह उसके आत्मा के द्वारा उत्पन्न होना चाहिए। यद्यपि यह हमारी स्वाभाविक योग्यताओं और स्वाभाविक शक्ति के द्वारा ही होगा, परन्तु यह आत्मा के द्वारा ही उत्पन्न होना चाहिए। जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है परन्तु जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। हम मानवीय बुद्धि, तर्क और कल्पनाओं के आधार पर कोई काम आरम्भ करके यह आशा नहीं कर सकते कि वह परमेश्वर का काम है चाहे वह काम कितना भी आत्मिक क्यों न लगे। यदि यह

कार्य आत्मा से नहीं जन्मा है तो वह कितना भी धार्मिक काम क्यों न लगे, वह फिर भी शरीर का काम है। परमेश्वर शरीर के कामों को अभिषिक्त नहीं करेगा (निर्गमन 30:32)।

परमेश्वर का काम आपको परेशानी में डाल सकता है

मरियम के लिए कितने आदर की बात थी जिसके द्वारा इस संसार का उद्धारकर्त्ता पैदा होने वाला था। परन्तु फिर भी वह कितनी बड़ी मुसीबत में पड़ गई। परन्तु यहाँ एक जवान स्त्री है, जिसकी शादी नहीं हुई है और वह गर्भवती है। जी हाँ, वह परमेश्वर के पुत्र को गर्भ में लिए हुए है, परन्तु क्या उसके परिवार के लोग और मित्र उसकी कहानी स्वीकार करेंगे? क्या वे उसकी बात पर विश्वास करेंगे जब वह बताएगी कि वह परमेश्वर के आत्मा के द्वारा गर्भवती है। क्यों परमेश्वर ने मरियम को ऐसी मुसीबत में डाला जब वह अपने पुत्र को उसके द्वारा संसार में भेजना चाह रहा था।

यहाँ एक शिक्षा है जो हमें अवश्य सीखनी चाहिए। प्रायः जब हम परमेश्वर का काम आरम्भ करते हैं तब वही कार्य हमें लोगों के सामने एक अजीब परिस्थिति में डाल देता है। प्रत्येक व्यक्ति उस काम को नहीं समझेगा जिसे परमेश्वर हमारे जीवनों के द्वारा कर रहा है। हम तुच्छ समझे और अस्वीकार किए जा सकते हैं। प्रायः परमेश्वर हमें ऐसी परिस्थितियों में होकर जाने देता है ताकि शरीर के काम नाश हो जाएं और हम घटें और परमेश्वर का पुत्र बढ़े। हम सीखते हैं कि प्रभु यीशु की गवाही से और उस काम से जो वह हमारे द्वारा कर रहा है न शर्माएं।

परमेश्वर का अलौकिक कार्य प्रायः सामान्य, स्वााभाविक प्रक्रियाओं से होता है। यद्यपि मरियम के गर्भ में अलौकिक रूप से बच्चा आ गया, परन्तु फिर भी उसे नौ माह तक अपने गर्भ में रखना पड़ा। परमेश्वर ने एक चमत्कार के द्वारा क्यों नहीं ये सब कर दिया–गर्भधारण, बच्चे का जन्म? क्या यह एक बड़ा चमत्कार नहीं होता कि पहले दिन बच्चा गर्भ में आता और अगले दिन उत्पन्न हो जाता? क्यों मरियम को एक सामान्य और प्राकृतिक प्रक्रिया से होकर गुजरना पड़ा और बच्चे को नौ माह तक

गर्भ में रखना पड़ा? हम यहाँ एक महत्वपूर्ण शिक्षा लेते हैं। प्रायः परमेश्वर का काम इस पृथ्वी पर सामान्य और प्राकृतिक प्रक्रिया के द्वारा सम्पन्न किया जाता है। उदाहरण के लिए शायद परमेश्वर ने आपको एक सुदृढ़ स्थानीय कलीसिया की स्थापना करने के लिए बुलाया है। यह वह काम हो सकता है जिसे परमेश्वर आपके द्वारा करवाना चाहता है। इस काम के लिए उसने आपको अभिषेक किया होगा। तौभी आपको कठिन परिश्रम से लोगों को एकत्रित करना, उन्हें सिखाना, प्रचार करना, उनकी चिन्ता करना, योजना बनाना आदि करना पड़ेगा। परमेश्वर के अलौकिक कार्य आपकी स्वाभाविक और सामान्य प्रक्रियाओं के द्वारा पूरे किए जाएंगे।

अलौकिक प्रबन्ध के विषय में विचार करें। परमेश्वर के लोग होने के नाते हमें अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भरोसा रखना चाहिए। हम परमेश्वर की अलौकिक पूर्ति में विश्वास करते हैं। कभी-कभी हम यह समझने में असफल होते हैं कि परमेश्वर की अलौकिक रीति से हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति हमारे हाथों के कामों के द्वारा पूरी होती है। हमें काम करना पड़ता है-लेकिन फिर भी यह पूर्ति अलौकिक रूप से होती है। उदाहरण के लिए यदि आपके पास नौकरी है तो यह एक चमत्कार है। और जो पूर्ति आपकी नौकरी के द्वारा हो रही है वह एक अलौकिक कार्य है।

जब तक आपको ठीक स्थान न मिल जाए जहाँ परमेश्वर आपके द्वारा काम करवाना चाहता है तब तक आपको दरवाजे बन्द मिल सकते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि "मरियम ने अपना पहलौठा पुत्र जना और उसे कपड़े में लपेट कर चरनी में रखा क्योंकि उनके लिए सराय में जगह नहीं थी" (लूका 2:7)। हमें नहीं मालूम कि यरूशलेम में कितनी और सराएं थीं। हम अपने मन में कल्पना कर सकते हैं कि मरियम और यूसुफ बहुत सी सराओं में गए होंगे और उन्हें कहीं भी जगह नहीं मिली। अथवा शायद वे एक ही सराय में गए होंगे और वहाँ कमरा नहीं मिला

और सराय के मालिक ने उन्हें गौशाला में भेज दिया। क्या इस विश्व का परमेश्वर कम से कम एक कमरा अपने पुत्र के जन्म के लिए सुरक्षित नहीं रख सकता था? क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि मरियम के मन में कैसे विचार आ रहे होंगे? उसने सोचा होगा कि परमेश्वर मेरे लिए एक कमरा सुरक्षित रखेगा। आखिकार जिस बच्चे को मैं जन्म देने जा रही हूँ वह परमेश्वर का ही पुत्र है। मुझे निश्चय है कि सराय में हमारे लिए एक कमरा खाली होगा। परन्तु फिर भी कितनी निराशा हुई होगी जब उन्होंने प्रत्येक द्वार को खटखटाया तो वे सब उन्हें बन्द मिले जब तक कि वे ठीक उस स्थान तक नहीं पहुँचे जिसे परमेश्वर ने अपने बच्चे को जन्म देने हेतु चुना था। ऐसा ही हमारे जीवनों में भी होता है। जब हम इस पृथ्वी पर परमेश्वर के काम को जन्म देते हैं तो हमें भी सारे द्वार बन्द मिल सकते हैं। केवल इसलिए कि हमें बन्द दरवाजों का सामना करना पड़ रहा है, इसका अर्थ यह नहीं है कि जिस काम को हम करने जा रहे हैं वह ठीक नहीं है। बन्द द्वारों का साधारण अर्थ है कि आप आगे बढ़ते जाएं। नए द्वारों को खटखटाते जाएं, जब तक उस जगह पर न पहुँच जाएं जहाँ परमेश्वर हमसे काम करवाना चाहता है।

बहुत से ऐसे लोग हैं जिनकी आत्माओं में प्रभु ने एक अच्छा काम डाला है। उनमें जो कुछ है वह पवित्रात्मा के द्वारा डाला गया है। फिर भी वे उसे जन्म नहीं दे सकते जब तक कि वे ठीक उस स्थान पर न पहुँच जाएं जहाँ परमेश्वर उनसे वह काम करवाना चाहता है। वे एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहे और उन्हें वह जगह नहीं मिली जहाँ वे उस काम को जन्म देते जब तक कि वे ठीक स्थान पर नहीं पहुँच गए, जहाँ परमेश्वर उनसे काम लेना चाहता था। परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करवाने से पहले हमें ठीक स्थान पर लाना चाहता है जहाँ वह अपना काम हमसे करा सके।

परमेश्वर के काम की सुरक्षा और देखभाल करनी पड़ती है।

बालक यीशु को भी उसी प्रकार बढ़ना पड़ा जैसे कोई अन्य बच्चा बढ़ता है (लूका 2:40)। यीशु जिस दिन पैदा हुआ उसी दिन अपने आप खाने

और कपड़े नहीं पहनने लगा। परन्तु मरियम ने उसकी देखभाल की और उसे बढ़ाया जैसे अन्य माँए करती हैं। बल्कि यूसुफ और मरियम को बालक यीशु की सुरक्षा करनी पड़ी और बैतलेहम को छोड़कर मिस्र जाना पड़ा क्योंकि हेरोदेस राजा बालक यीशु को मरवाने का प्रयास कर रहा था (मत्ती 2:12-16)। मरियम और यूसुफ ने बालक को यूँ ही यह सोचकर नहीं छोड़ दिया कि यह तो परमेश्वर का पुत्र है। निश्चय ही वह अपने आप खा लेगा, अपनी देखभाल स्वयं कर लेगा और अपनी रक्षा स्वयं कर लेगा। मरियम की जिम्मेदारी न सिर्फ परमेश्वर के पुत्र को जन्म देने की थी, परन्तु उसकी देखभाल और सुरक्षा की भी थी। ठीक उसी प्रकार जैसे एक माँ अपने बच्चे के पालन-पोषण, भोजन, देखभाल, सुरक्षा करती है, हमें भी परमेश्वर के काम को जिसे हमने जन्म दिया है, देखभाल करना, पोषण करना और सुरक्षा करना आवश्यक है। हम शैतान और अन्य दुष्ट लोगों को अनुमति नहीं देगें कि वे उस काम को नाश करें जिसे परमेश्वर ने हमारे द्वारा उत्पन्न किया है।

अब हम यहाँ उन चार तत्वों को अध्ययन करेंगे जिनके द्वारा परमेश्वर के काम को उत्पन्न किया जाता है।

परमेश्वर का काम

- परमेश्वर का काम इस पृथ्वी पर एक निश्चित समय में होता है।
- परमेश्वर का काम सामान्य लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है।
- परमेश्वर का काम बिना मिलावट-उसके आत्मा के द्वारा उत्पन्न होना आवश्यक है।
- परमेश्वर का काम आपको परेशानी में डाल सकता है।
- जब तक आपको ठीक स्थान न मिल जाए जहाँ परमेश्वर आपके द्वारा काम करवाना चाहता है तब तक आपको दरवाजे बन्द मिल सकते हैं।
- परमेश्वर के काम की सुरक्षा और देखभाल करनी पड़ती है।

3

आप में किया गया निवेश

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को हमारे उन गुणों के द्वारा प्रकट करता है जो हममें निवेश किए गए हैं।

हममें किए गए निवेश के द्वारा यह निश्चय किया जाता है कि हम क्या उत्पन्न कर सकते हैं।

"यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो, या पेड़ को निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ अपने फल से ही पहचाना जाता है। हे साँप के बच्चो, तुम बुरे होकर कैसे अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। और मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा" (मत्ती 12:33-37)।

एक भला मनुष्य अपने हृदय के भण्डार से भली वस्तुऐं निकालता है। हमारे अन्दर से जो निकलता है वह उस बात पर निर्भर है कि हममें क्या निवेश किया गया है। यदि हमारे हृदय में भली वस्तुओं का भण्डार है तो हम भली वस्तुओं को जन्म देंगे। यदि हमारे हृदयों में बुरी बातों का भण्डार है तो हम बुरे कामों को जन्म देंगे। हम में जो कुछ है वही इस बात का निश्चय करता है कि हम किसको जन्म देंगे।

"झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्दर में वे फाड़नेवाले भेड़िए हैं। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ अच्छा फल नहीं ला

सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे" (मत्ती 7:15-20)।

यहाँ यीशु फरीसियों के विषय में बात कर रहे हैं। फरीसी सोचते थे कि यदि उनके "फल अच्छे" हैं तो वृक्ष अच्छा बन जाएगा। परन्तु यीशु ने कहा कि इसका विपरीत ही सही है। यदि पेड़ अच्छा है तो इसका फल भी अच्छा होगा। पेड़ अपने फलों से पहचाना जाता है। हमारे अन्दर जो कुछ है वही निश्चय करता है कि हम कैसा फल उत्पन्न करते हैं। यही इस बात का निश्चय करता है कि हम क्या उत्पन्न करते हैं। यही निश्चय करेगा कि हम क्या करते हैं। इसी प्रकार परमेश्वर भी अपना काम हमारे द्वारा उसी परिमाण में आरम्भ करता है जो हमारे अन्दर पाया जाता है। अतः हमारे जीवनों में जो कुछ निवेश किया गया है, और जिसे हम लगातार कर रहे हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है।

किस प्रकार निवेश किया जाता है?

परमेश्वर हमारे अन्दर कुछ बातों को रखता है।

"यूहन्ना ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाये, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता" (यूहन्ना 3:27)।

परमेश्वर हमारे जीवनों में कुछ बातें रख सकता है। हमारे अन्दर भला भण्डार जो पाया जाता है वह स्वयं परमेश्वर के द्वारा ही रखा गया है। वह जो कुछ हमारे पास है वह परमेश्वर के पास से आया है। यह निवेश हमारे अन्दर इसलिए है क्योंकि इसे परमेश्वर ने ही हमारे अन्दर रखा है। परमेश्वर जब चाहे तब हमारे जीवनों में भली बातें निवेश कर सकता है। यदि परमेश्वर ऐसा चाहे तो वह आपके जीवन में कभी भी वरदान, अभिषेक और अन्य योग्यताऐं डाल सकता है जो वर्तमान में आपके पास नहीं हैं।

अन्य लोग हमारे जीवनों में बातों को निवेश कर सकते हैं

"जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है" (नीतिवचन 27:17)।

हम जिन लोगों के सम्पर्क में आते हैं वे या तो भली बातें अथवा बुरी बातें हम में निवेश करते हैं। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में परमेश्वर ने मूसा और यहोशू का सम्बन्ध स्थापित किया (व्यवस्थाविवरण 1:38)। परमेश्वर ने मूसा से कहा जा और यहोशू को अगुवा बना (गितनी 27:18-23)। मूसा ने यहोशू को अगुवा बनाया (गिनती 27:18-33)। मूसा का अभिषेक यहोशू को भी मिल गया। यहोशू के पास बुद्धि का आत्मा इसलिए था क्योंकि मूसा ने उस पर हाथ रखे (व्यवस्थाविवरण 34:9)। एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में कुछ रखा जाता है। हमारे जीवनों में भली वस्तुएं दूसरे लोगों से मिलती हैं। अतः हम ध्यानपूर्वक ऐसे लोगों का चुनाव कर सकते हैं जिनके साथ हम संगति करें और उन्हें अनुमति दें कि वे हमारे अन्दर भली बातों को डालें।

हम अपने जीवनों में भली वस्तुएं डाल सकते हैं

"सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है" (नीतिवचन 4:23)।

हम निश्चय कर सकते हैं कि हम अपने जीवन में क्या निवेश करते हैं। आप जानबूझ कर अपने जीवन में परमेश्वर का वचन पढ़ कर, विशेष प्रकार के लोगों के साथ समय बिताने और विशेष प्रकार का प्रशिक्षण लेने के द्वारा भली वस्तुऐं निवेश कर सकते हैं। जब हमारे अन्दर भली वस्तुओं का भण्डार होगा तब हम अपने आप को उस स्थान पर ला पाएंगे जहाँ हम अच्छी बातों को उत्पन्न कर पाएंगे।

जब हम उन कामों को समझना आरम्भ करेंगे जिन्हें परमेश्वर हमारे द्वारा उत्पन्न करना चाहता है तब हमें ऐसी बातें अपने अन्दर डालना चाहिए ताकि वे काम आरम्भ हो सकें। ऐसा हम कई तरह से कर सकते हैं-हम परमेश्वर से कह सकते हैं कि वह हमारे अन्दर उन बातों को आपके अन्दर डाल सके, अथवा आवश्यक प्रशिक्षण पाने के द्वारा। क्योंकि यदि हमारे अन्दर ये बातें होंगी तभी हम उन बातों को उत्पन्न कर सकते हैं। हम उन बातों को जन्म नहीं दे सकते जो हमारे अन्दर डाली नहीं गई हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप पास्टर हैं और एक नयी

कलीसिया स्थापित की है, परमेश्वर चाहता है कि आपकी कलीसिया बढ़े, बड़ी हो, मजबूत बने और उसकी इच्छा के अनुसार बने। अब आप को फैसला करना है कि आपमें किस प्रकार का निवेश आवश्यक है ताकि ऐसा हो सके। शायद अब आपको अधिक परमेश्वर का वचन, परमेश्वर का अभिषेक, कलीसिया की अगुवाई और ठीक फैसले करने की बुद्धि और संगठित एवं प्रबन्धन की निपुणता आदि का निवेश करने की आवश्यकता है। अतः आपको वह सब करना चाहिए जो आवश्यक है–परमेश्वर का वचन पढ़ें, अभिषेक में आगे बढ़ें, अच्छी कलीसिया के प्रबन्धन के बारे में सीखें और ये बातें अपने जीवन में रखें, ताकि कलीसिया से सम्बन्धित बातें आपके द्वारा उत्पन्न हो सकें।

निवेश

- परमेश्वर हमारे अन्दर कुछ बातों को रखता है।
- अन्य लोग हमारे जीवनों में बातों को निवेश कर सकते हैं।
- हम अपने जीवनों में भली वस्तुएं डाल सकते हैं।

4

प्रार्थना के द्वारा उत्पन्न करना

हम अपने जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्यों को प्रार्थना के द्वारा जन्म देते हैं। प्रार्थना, एक प्रकार से उत्पन्न करने की प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की बातों को इस पृथ्वी पर जन्म देते हैं।

प्रार्थना में आप परमेश्वर के उद्देश्यों की समझ प्राप्त करते हैं।

"जो बातें आँख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुनीं, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ीं वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं। परन्तु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है" (1 कुरिन्थियों 2:9,10)।

"क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है" (1 कुरिन्थियों 14:2)।

सम्पूर्ण सामान्य मानवजाति के लिए योजना और उद्देश्यों के अलावा परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत योजनाऐं बनाई हैं (इफिसियों 2:10)। हम में से कुछ के लिए ये योजनाएं "छिपी" अथवा भेद-भरी प्रतीत हो सकती हैं। तौभी परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर के मन को जानता है। पवित्रात्मा परमेश्वर की गूढ़ बातों को जानता है और परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों से भली-भाँति परिचित है-क्योंकि वह स्वयं ही परमेश्वर है। परमेश्वर का आत्मा उसकी योजना और उद्देश्य हम पर प्रकट करेगा। यह प्रायः प्रार्थना में होता है।

जब आप आत्मा में प्रार्थना करते हैं तब आप परमेश्वर के उद्देश्यों को अस्तित्व में लाने हेतु प्रार्थना करते हैं

एक शक्तिशाली लाभ अन्य भाषा (आत्मा) में प्रार्थना करने का यह होता है कि हम "भेद भरी" बातों के लिए प्रार्थना करते हैं। प्राय: जब हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं तब हम वास्तव में अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को बोलते हैं, जो उस समय तक एक भेद-एक छिपी हुई बात होती है।

परमेश्वर प्रार्थना में उन बातों को प्रकट करता है जिन्हें वह हमारे द्वारा उत्पन्न करवाना चाहता है। जब हम प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर के उद्देश्य हमारी आत्मा में उतरने आरम्भ हो जाते हैं।

हम जैसे-जैसे लगातार आत्मा में प्रार्थना करते हैं, हम आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर के उद्देश्यों को आकार देते हैं। अभी तक जन्म नहीं हुआ है। परन्तु गर्भधारण से प्रसव तक का समय उन्नति का होता है, भीतरी उन्नति, अदृश्य क्षेत्र में उन्नति। यह तब होता है जब हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं। हम अभी तक किसी बदलाव को नहीं देखते परन्तु आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर के उद्देश्यों ने आकार लेना आरम्भ कर दिया है। हाथ, अंग और शरीर बढ़ रहा है और इस पृथ्वी पर जन्म लेने के समय के निकट पहुँचता जा रहा है। अत: जब हमें एक-एक विचार या दर्शन प्रभु की ओर से मिलता है तब हमें उनके लिए प्रार्थना करना चाहिए। और तब ठीक समय पर, उसके समय के पूरे होने पर वह उद्देश्य पूरा हो जाएगा।

प्रार्थना आपकी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा से मिलाती है

"यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊँचे शब्द से पुकार-पुकारकर और आँसू बहा-बहाकर उससे जो मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और विनती की, और भक्ति के कारण उसकी सुनी गई। पुत्र होने पर भी उसने दुख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया" (इब्रानियों 5:7-9)।

"तब उसने उनसे कहा,"मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।" फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना की,"हे मेरे पिता, यदि हो सके तो

यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो" फिर उसने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की, "हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो" (मत्ती 26:38,39,42)।

हमारे मस्तिष्क को यह समझना कठिन होता है कि परमेश्वर के पुत्र को आज्ञाकारिता सीखनी पड़ी। परन्तु ऊपर लिखे गए पद हमें बताते हैं कि पुत्र को "परमेश्वर का भय" था और वह पिता का आदर करता था। गतसमनी के बाग में जब यीशु मौत का सामना करने ही वाला था, वह बलिदान पूर्ण मृत्यु को प्राप्त होनेवाला था, तब उसने पीड़ा में होकर तीव्रता से प्रार्थनाएं की, तब वह उस बिन्दु तक पहुँचा जहाँ वह पिता की इच्छा के लिय "हाँ" कर सका। उस गहन पीड़ा के समय में उसकी प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की इच्छा और यीशु की इच्छा एक हो सकी, वह मृत्यु तक परमेश्वर का आज्ञाकारी रहा।

इसी प्रकार हमारे जीवनों में भी, हम प्राय: ऐसे बिन्दु पर आते हैं जहाँ हमारी इच्छा परमेश्वर की इच्छा के साथ मेल नहीं खाती है। और तब हम परमेश्वर के सम्मुख प्रार्थना में जाते हैं, तब प्राय: हमारी इच्छा परमेश्वर की इच्छा के साथ मेल खाती है। तब हम प्रार्थना से बाहर यह कहते हुए आते हैं "आपकी इच्छा पूरी हो।"

अत:, प्रार्थना न केवल परमेश्वर के उद्देश्यों को जब तक वह स्वाभविकता में न आ जाए, जन्म लेने, आकार लेने में सहायता करती है, परन्तु हमारी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा में मिलाने में भी सहायता करती है ताकि हम परमेश्वर के उद्देश्यों को इस पृथ्वी पर स्थापित कर सकें।

प्रार्थना

- प्रार्थना में आप परमेश्वर के उद्देश्यों की समझ प्राप्त करते हैं।
- जब आप आत्मा में प्रार्थना करते हैं तब आप परमेश्वर के उद्देश्यों को अस्तित्व में लाने हेतु प्रार्थना करते हैं।
- प्रार्थना आपकी इच्छा को परमेश्वर की इच्छा से मिलाती है।

5

बोले गए वचन

हमारे द्वारा बोले गए वचन एक हथियार है जिनके द्वारा हम परमेश्वर के उद्देश्यों को इस पृथ्वी पर लागू करते हैं। हमारे वचन हमारे वर्तमान और भविष्य को प्रभावित करते हैं और आकार प्रदान करते हैं।

ऐसे वचन बोलें जिनके द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आपका जीवन आग पर रखा जाए।

"जीभ एक आग है; जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है, और जीवनगति में आग लगा देती है, और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है" (याकूब 3:6)।

जीभ एक 'आग' है। इसका अर्थ है कि जीभ का बड़ा प्रभाव होता है। यह पद विशेषकर एक दुष्ट जीभ के प्रभाव के बारे में बताती है। इसके विपरीत, यही बात एक भली जीभ के विषय में कही जा सकती है।

बुरी जीभ बुरा संसार है जबकि भली जीभ एक आशीषित संसार है। बुरी जीभ सम्पूर्ण देह को दूषित करती है जबकि एक भली जीभ सम्पूर्ण शरीर को आशीषित करती है। साधारण सन्देश यह है कि हमारी जीभ हमारे पूरे शरीर को प्रभावित करती है।

हमारी जीभ हमारे जीवनचर्या और हमारे अस्तित्व को प्रभावित करती है। हमारी जीभ के द्वारा हमारा जीवन आग पर रखा जाता है। यह हमारे शब्दों, जिन्हें हम बोलते हैं के द्वारा प्रभावित होता है। एक बुरी जीभ आग पर रखी जाती है, अथवा नर्क के द्वारा प्रेरित होती है। परन्तु एक जीभ जो आशीष का संसार है, एक अभिषेक का संसार है, वह परमेश्वर की आग, उसके वचन और उसके आत्मा के द्वारा प्रभावित होता है। वह जीभ जो परमेश्वर उसके वचन और उसके आत्मा के द्वारा आग पर रखी जाती है वह पूरी देह को आशीषित करती है। यही वह जीभ है जो हमारे

जीवन को आशीष के साथ आग पर रखती है। यही वह जीभ है जो परमेश्वर के उद्देश्यों को इस पृथ्वी पर स्थापित करती है।

एक जीभ अधार्मिकता अथवा आशीष का संसार हो सकती है। हम अपने शब्दों के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देते हैं। हमें ऐसे शब्द बोलने चाहिए जो हमारी दिनचर्या और अस्तित्व के साथ परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को आग पर रख सकें। हमें परमेश्वर की बातों को अस्तित्व में लाने वाले शब्दों को बोलना चाहिए।

बोले गए वचन के द्वारा अपने संसार को आकार प्रदान करें।

"विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो" (इब्रानियों 11:3)।

स्वाभाविक वस्तु आत्मिक वस्तु से बनी है। दृश्य वस्तुऐं अदृश्य में से निकली हैं। अदृश्य अथवा आत्मिक बातें जिसे स्वाभाविकता को बनाने हेतु प्रयोग किया गया था वह है परमेश्वर के द्वारा बोला गया वचन। अतः यह परमेश्वर का वचन ही है जो स्वााभाविक संसार की वस्तुओं को आकार देता, उत्पन्न करता अथवा अस्तित्व में लाता है। परमेश्वर ने हमें अधिकार और योग्यता दी है कि हम उसका वचन अपने जीवनों में बोलें और अपने अस्तित्व की दिनचर्या को आग पर रखें और निश्चय करें कि हम इसे किस प्रकार का जीवन बनाना चाहते हैं।

अपने जीवन में परमेश्वर के स्वपनों, योजनाओं और उद्देश्यों को बोलें।

बोले गए वचन

- ऐसे वचन बोलें जिनकें द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आपका जीवन आग पर रखा जाए।
- बोले गए वचन के द्वारा अपने संसार को आकार प्रदान करें।
- अपने जीवन में परमेश्वर के स्वपनों, योजनाओं और उद्देश्यों को बोलें।

6

परिश्रम के साथ काम

"जो काम में ढिलाई करता है, वह निर्धन हो जाता है, परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं" (नीतिवचन 10:4)।

"आलसी का प्राण लालसा तो करता है, और उसको कुछ नहीं मिलता, परन्तु कामकाजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं" (नीतिवचन 13:4)।

"परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर के अनुग्रह से हूँ। उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैंने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था" (1 कुरिन्थियों 15:10)।

कोई भी स्वप्न तब तक पूरा नहीं होता है जब तक कि कोई व्यक्ति अपना खून, पसीना और आँसू एक न कर दे। इसमें परिश्रम की आवश्यकता होगी, यदि हम परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना चाहते हैं।

वे जो आँसू बहते हुए बोते हैं आनन्द की कटनी काटेंगे (भजनसंहिता 126:50)। हम कभी भी आनन्द की कटनी नहीं काट सकेंगे यदि हम पहले आँसुओं के साथ बोने के लिए तैयार नहीं हैं। हमारे पास परमेश्वर के द्वारा दिया हुआ दर्शन अथवा स्वप्न हो सकता है, परन्तु इसे पूरा करने की आवश्यकता होगी। हमें एक के ऊपर एक ईंट रखना है और अचानक विरोध की हवा चलेगी और कुछ ईंटों को गिरा देगी। परन्तु हमें उन्हें उठाना है और फिर से बनाना है और आगे बढ़ते जाना है। परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा।

परमेश्वर ने हमें केवल स्वप्न देखनेवाला ही नहीं ठहराया है परन्तु कार्य करने के लिए बुलाया है जो उसके राज्य के लिए काम करें। हमें सेवा के काम करने के लिए बुलाया गया है न कि मात्र सेवा के काम

का स्वप्न देखनेवाला। प्रत्येक कठिनाईयों और चुनौतियों में काम करते जाएं और वह स्वप्न पूरा हो जाएगा।

मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर के पास हममें से प्रत्येक के लिए ऐसी योजनाएं हैं जिन्हें वह हमारे द्वारा उत्पन्न करना चाहता है। स्वर्ग में यह कहते हुए न जाएं, "प्रभु मैंने बड़े-बड़े स्वप्न देखे थे लेकिन मैंने कुछ भी नहीं किया।" हमें यह जानते हुए स्वर्ग जाना चाहिए कि हमने उन सब कामों को जन्म दिया है जिन्हें परमेश्वर मेरे द्वारा इस पृथ्वी पर पूरा करवाना चाहता था।

परिश्रम के साथ काम

- ➢ स्वप्न तभी वास्तविकता बनते हैं जब आप उनके लिए पसीना बहाते हैं।
- ➢ परिश्रमी काम के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों का जन्म होता है।
- ➢ आईये हम अपने जीवनों में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करें।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

ALL PEOPLES CHURCH
Bible College
& MINISTRY TRAINING CENTRE

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

जब परमेश्वर इस पृथ्वी पर अपने उद्देश्यों को पूरा करना चाहता है, तब कभी-कभी वह स्वर्गदूतों का प्रयोग करता है। परन्तु प्रायः वह मनुष्यों के द्वारा ऐसा करता है। इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को आप और मेरे जैसे लोगों के द्वारा पूरा किया जाता है।

आप जैसे-जैसे परमेश्वर के साथ चलते जाते हैं वैसे-वैसे आप उन उद्देश्यों और योजनाओं को खोजते जाएगें जिन्हें वह आपके द्वारा इस पृथ्वी पर पूरा करना चाहता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण हो सकते हैं-जैसे एक कुँवारी के द्वारा परमेश्वर के पुत्र को जन्म देना और कुछ बहुत छोटे-जैसे ग्रामीण क्षेत्र में एक नर्सरी स्कूल की स्थापना करना, जिसके विषय में कोई नहीं जानता है। तौभी ये सभी काम हैं जिन्हें परमेश्वर इस पृथ्वी पर करवाना चाहता है।

इस पुस्तिका में पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के विषय में अध्ययन किया गया है। इसलिए अपने जीवन के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करते हुए चलते जाएं!

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org